सांस्कृतिक स्थलचिन्ह

- **बरेली**

  किसी कवि ने क्या खूब लिखा है, बरेली नगर के बारे में. "लखनऊ शर्क, गर्ब देहली दोनों का दिल बरेली " रामगंगा नदी के तट पर बसा बरेली शहर रूहेलखंड के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक राजधानी है ।

- **मुरादाबाद**

  रामगंगा नदी के तट पर स्थित रूहेलखंड क्षेत्र का मुरादाबाद नगर पीतल नगरी के नाम से जाना जाता है, जो हस्तशिल्प के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इसका निर्यात केवल भारत में ही नहीं बल्कि अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी और मध्य पूर्व एशिया आदि देशों में भी किया जाता है।

- **रामपुर**

  रामपुर, ऐतिहासिक और शैक्षिक मूल्य से समृद्ध शहर है। समृद्ध विरासत और विविध संस्कृति का मिश्रण आकर्षित करता है। दुनिया भर के विद्वान रामपुर राजा पुस्तकालय में भारत-इस्लामी परंपराओं और मूल्यों को सीखने के लिये आते हैं। रामपुर शहर शाही विचारधारा दर्शाता है। शहर के खूबसूरत गुम्बदों, झरोको और विशाल दीवारों का शहर आपका स्वागत बड़े विशाल दरवाज़ों से करता है। रूहेलखंड के संगीत और संस्कृति की राजधानी रामपुर अपने आप में सभी रंगों को समेटे हुए है।

- **बदायुं**

  बदायुं संगीत के सूफी घराने के लिए विश्व विख्यात जो रामपुर सहसवान घराने कि जड़ है, कव्वाली बदायुं से पनपी और पली है।

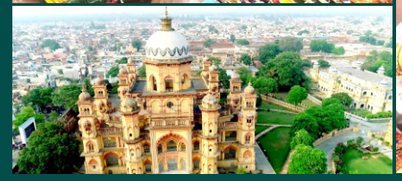

Content Writer - Swarnika Pandey | Surya Saxena
Design - Amardeep Sharma
Production - IMAGE & CREATION
0522 4000344 www.imagencreation.com
imagecreation08@gmail.com

उत्तर प्रदेश सरकार

डाक्यूमेंट्री फिल्म

सांस्कृतिक क्षेत्र

रुहेलखंड

संस्कृति विभाग
उत्तर प्रदेश

रुहेलखंड क्षेत्र की संस्कृति

उत्तर प्रदेश के मध्य भू-भाग में स्थित रुहेलखण्ड क्षेत्र। प्राचीन काल से सांस्कृतिक और कला का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। अफगानिस्तान के रुहेलों द्वारा इस क्षेत्र में आधिपत्य जमाने के बाद से, यह क्षेत्र रुहेलखण्ड कहा जाने लगा। इसके पूर्व इसका नाम कटेहर तथा पांचाल था।

महाकाव्य महाभारत के अनुसार, पांचाल, द्रौपदी का जन्मस्थान माना जाता है।

रुहेलखंड सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यन्त प्रभावशाली चाहे शास्त्रीय घराना सुफी अंदाज हो , कव्वाली हो, हथकरघा कला हो बरेली के बांस का फर्नीचर हो।

यहाँ की क्षेत्रीय भाषा अवधी और ब्रज भाषा के मिश्रण में रचित और आज भी यहाँ के गाँवों में यहाँ के गीतों को सुना जा सकता है। जैसे होली के गीत और चौपाइयाँ, विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत, सावन के गीत और नवरात्र के अवसर पर गाए जाने वाले गीत जैसे, सावन ऋतु को आधार बनाकर असंख्य गीत लिखे गये हैं।

संगीत एवं नृत्य

- **शास्त्रीय रामपुर घराना गायन**
  राशिद खान | शाश्वत हुसैन खान
- **ढोल**

  विभिन्न स्थानीय लोक कथाओं पर आधारित संगीत की यह विधा रुहेलखण्ड क्षेत्र की विशेषता है। मारु का गौना नामक लोककथा इसी प्रकार की लोक कथा है। जिसे प्रायः ढोला गायन का आधार बनाया जाता है। ढोला गायन में वाद्यों जैसे ढोलक. मजीरा, खजरी और चंग झंकार आदि का प्रयोग किया जाता है।
- **स्वांग**

  लोक नाटिकाएं रुहेलखण्ड की लोक संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। स्वाँग का केन्द्र, रामायण, महाभारत तथा अन्य पौराणिक कथाएँ हैं। यहाँ वास्तव में स्वाँग में किसी सम्पूर्ण कथा का प्रस्तुतीकरण न करके अमुक कथा के एक अंश विशेष को प्रस्तुत किया करता है।
- **रसिया**

  स्वाँग का ही तरह रसिया संगीत पर आधारित हैं। विभिन्न त्यौहारों के अवसर पर शाम ढले गाँवों की चौपालों पर इनका प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इस लोक नाटिका में प्रयुक्त वाद्ययन्त्रों में ढोलक प्रमुख हैं।